इकाई-I

3. बस की यात्रा

-हरिशंकर परसाई

प्रस्तावना प्रसंग–

कुछ देर बाद ऐसी दशा हो गई कि कोई हमारा सब असबाब ले ले और हमें लेटने का स्थान दे दे। परन्तु वहाँ कहाँ सज्जनकर वासा। थोड़ी देर में पुनः ट्रेन रुकी तो हम फिर झोंके में आगे की ओर गिरे। संभलने के लिए हाथ जो बढ़ाया तो एक महाशय की गर्दन पर गिर पड़े। वह अपनी सीट से लुढ़ककर नीचे और हम उनके ऊपर। लोगों ने खींच-खींच कर हमें उठाया। एक महाशय बोले– "इन्हें बैठने की जगह देनी चाहिए, नहीं तो आज यहाँ फौज़दारी हो जाएगी।" यह राय लोगों को पसंद आ गई और कुछ व्यक्तियों ने अपने शरीर को सिकोड़-सिकोड़ कर हमें केवल इतना स्थान दिया कि हम केवल बैठ सकें और वह भी दोनों घुटनों पर हाथ रखके उनके सहारे।

'रेलयात्रा' से– विश्वंभरनाथ शर्मा "कौशिक"

प्रश्न

1. प्रस्तुत अवतरण में किस चीज़ की यात्रा का वर्णन है?
2. लोगों ने लेखक के मित्र को बैठने के लिए स्थान क्यों दिया?
3. आजकल यात्रा और भी सरल बनाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

SCERT

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है।

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा- ''यह बस चलती भी है?'' वह बोले- ''चलती क्यों नहीं है जी अभी चलेगी।'' हमने कहा- ''वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?''

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है?

हम आगा-पीछा करने लगे। डाक्टर मित्र ने कहा- ''डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से लेकर चलेगी।''

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं- ''आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा- राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।''

SCERT TELANGANA

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसा सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन की दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे।

SCERT TELANGANA

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे- ''बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।''

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती- ''निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।''

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान की भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते- ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिये। मर गया, पर टायर नहीं बदला।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गये। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गये। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. इस प्रकार की बस को यातायात के लिए उपयोग में लाना खतरनाक हो सकता है। ऐसी बसों पर रोक लगाना किसकी ज़िम्मेदारी है? आप इस संदर्भ में क्या कर सकते हैं? चर्चा कीजिए।
2. आप अपनी किसी यात्रा के खट्टे–मीठे अनुभव अपने मित्रों को सुनाइए। उसपर चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
   - ♦ लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गयी?
2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शामवाली बस से सफ़र नहीं करते।"
   - ♦ लोगों ने यह सलाह क्यों दी?
3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"
   - ♦ लेखक को ऐसा क्यों लगा?
4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।
   - ♦ लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?
5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"
   - ♦ लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?
6. लेखक ने ऐसी बस से यात्रा क्यों की?
7. बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा क्यों उमड़ पड़ी?
8. लेखक ने ड्राइवर की तुलना एक क्रांतिकारी नेता से क्यों की?
9. सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यातायात का कौन-सा साधन आपको सर्वाधिक पसंद है? कारण बताइए।
2. बस के लिए आपके मन में किस प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं?
3. यात्रा के दौरान हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. यदि बस जीवित प्राणी होती, बोल सकती, तो वह अपनी बुरी हालत और भारी बोझ के कष्ट को किन शब्दों में व्यक्त करती?
2. यदि आप इस बस से विहार यात्रा पर जाते तो आपके मन में क्या-क्या विचार उत्पन्न होते?

शब्द भंडार

1. 'बस', 'वश', 'बस' तीन शब्द हैं- इनमें 'बस' सवारी के अर्थ में, 'वश' अधीनता के अर्थ में, और 'बस' पर्याप्त (काफ़ी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे-
   - बस से चलना होगा।
   - मेरे वश में नहीं है।
   - अब बस करो।
   - उपर्युक्त वाक्यों के समान 'वश' और 'बस' शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।
2. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गये। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।" दिये गये वाक्यों में आयी 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं, जैसे- घूमना इत्यादि। इन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
3. "काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।"
   इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में।
   नीचे दिये गये शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।
   (क) जल (ख) हार

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. एक मित्र **ने** ड्राइवर **को** देखकर साथियों **से** कहा- बस **के लिए** पेट्रोल चाहिए। अब हम बस **से** उतरें। बस **का** इंजन भी रुका है। बस **में** बैठना ठीक नहीं है। **हे** साथियो! पता नहीं कि बस कब चलेगी।

   रेखांकित शब्दांशों पर ध्यान दीजिये। कारक विभक्तियाँ पहचानिए। उनके नाम लिखिए।
2. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेज़ी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं- फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है- फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है, फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है- महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण लिखिए।

प्रशंसा

किसी एक मशीन का वर्णन करते हुए बताइए कि वह किस प्रकार हमारी सेवा करती है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

पाठ में दी गयी बस की तस्वीर देखकर उसकी आत्मकथा लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने घर के किसी बड़े-बुजुर्ग से उनके द्वारा की गई किसी यादगार यात्रा के बारे में पूछकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. अपने द्वारा की गयी यात्रा के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित वस्तुओं की काल्पनिक आत्मकथा लिखने का प्रयास सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA